INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC-GD 2022

FOR BSF, CISF, ITBP,
SSB, CRPF etc.

LATEST EDITION

STAFF SELECTION COMMISSION

भाग-3(B) हिंदी

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC - GD

2022

FOR BSF, CISF, ITBP, SSB, CRPF, ETC.

STAFF SELECTION COMMISSION

भाग – 3 (b)

सामान्य हिंदी

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**SSC GD (General Duty)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को **कर्मचारी चयन आयोग (SSC)**, द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**SSC GD**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/4s8xtg

Online order करें - https://cutt.ly/BNLHzXa

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2022)

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

हिंदी

1. हिंदी वर्णमाला	1
2. सन्धि और सन्धि विच्छेद	4
3. प्रत्यय एवं उपसर्ग	11
4. सामासिक पदों की रचना और समास – विग्रह	18
5. संज्ञा	36
6. सर्वनाम	41
7. विशेषण	43
8. लिंग	46
9. कारक	49
10.क्रिया	51
11. काल	52
12.वाच्य	53
13.अव्यय (अविकारी शब्द)	55
14.पर्यायवाची शब्द	61
15.विलोम शब्द	66
16.अनेकार्थक शब्द	76

17.मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ 79

18.शब्द – शुद्धि 88

19.शब्द – युग्म 93

20.अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों के समानार्थक हिन्दी शब्द 101

21.वाक्य रचना एवं वाक्यों के प्रकार तथा पदबंध 113

22.वाक्य – शुद्धि अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करना 120

23.व्याक्यांशों के स्थान पर एक शब्द 126

24.वचन 135

25.अलंकार 137

हिंदी

अध्याय – I

(हिंदी वर्णमाला)

भाषा के दो रूप होते हैं-

1. **मौखिक या उच्चारित भाषा-** मौखिक भाषा की सूक्ष्मतम इकाई ध्वनि होती है। वास्तव में ध्वनि का संबंध सुनने व बोलने से है। यह भाषा उच्चारण पर आधारित होती है। उच्चारण करने के लिए मानव के जो मुख्य-अवयव काम करते हैं वह उच्चारण अवयव कहलाते हैं।

2. **लिखित भाषा-** लिखित भाषा की सूक्ष्मतम इकाई वर्ण होती है। वर्ण का संबंध लिखने व देखने से है। वर्ण ध्वनि रूपी आत्मा का शरीर है।
लिखित रूप से भाषा की वह छोटी से छोटी इकाई जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते हो वर्ण कहलाते हैं।
जैसे एक शब्द है - नीला।
नीला शब्द के यदि टुकड़े किए जाए तो वे होंगे-
नी + ला
अब यदि नी और ला के भी टुकड़े किए जाए तो वे होंगे- न् + ई तथा ल् + आ।
अब यदि न ई, ल् आ के भी हम टुकडे करना चाहे तो यह संभव नहीं है। अतः ये वर्ण कहलाते हैं।
ये वर्ण दो ही प्रकार के होते हैं- स्वर तथा व्यंजन
वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं, शब्दों के मेल से वाक्य तथा वाक्यों के मेल से भाषा बनती है। अतः वर्ण ही भाषा का मूल आधार है।
हिंदी में वर्णों की संख्या 44 है।
वर्णों को दो भागों में बांटा जाता है

1. **स्वर** 2. **व्यंजन**

1. **स्वर** - स्वतंत्र रूप से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ स्वर कहलाती है, अर्थात वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता नहीं होती स्वर कहलाते हैं।
स्वरों की संख्या 11 - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
मात्राओं की संख्या 10 - क्योंकि 'अ' की कोई मात्रा नहीं होती।

2. **व्यंजन** - वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता होती है, अर्थात स्वरों के सहयोग से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ व्यंजन कहलाती हैं।
व्यंजनों की संख्या 33 होती है।

विशेष
1. हिंदी निदेशालय 1966 के अनुसार कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई है।
2. हिंदी की मानक लिपि 'देवनागरी' के अनुसार कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई है।
स्वरों का वर्गीकरण पाँच भागों में बांटा जाता है।

1. उच्चारण अवधि के आधार पर-

1. लघु स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में कम समय लगता है, अर्थात् एक मात्रा का समय लगता है, लघु स्वर कहलाते हैं।

   जैसे- अ, इ, उ, ऋ
   इन्हें मूल स्वर और ह्रस्व स्वर भी कहते हैं।

2. दीर्घ स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में लघु स्वरों की तुलना में दोगुना समय लगता है अर्थात दो मात्रा का समय लगता है, दीर्घ स्वर कहलाते हैं।

   जैसे- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
   इन्हें सन्धि स्वर भी कहते हैं।

2. ओष्ठाकृति के आधार पर -

1. वृत्ताकार स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में होठों की आकृति वृत्त के समान गोल हो जाती है, वृत्ताकार स्वर कहलाते हैं।

   जैसे- उ, ऊ, ओ, औ

2. अवृत्ताकार स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में होठों की आकृति वृत के समान गोल न होकर फैले रहते हैं। अवृत्ताकार स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- अ, आ, इ, ई, ऋ, ए, ऐ

3. जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार पर:-

1. अग्र स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग क्रियाशीलता रहता है, अग्र स्वर कहलाते हैं।

   जैसे- इ, ई, ऋ, ए, ऐ

2. मध्य स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का मध्य भाग क्रियाशील रहता है, मध्य स्वर कहलाते हैं ।

जैसे- 'अ'

3. पश्च स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का पिछला (पश्च) भाग क्रियाशील रहता है, पश्च स्वर कहलाते हैं ।

जैसे- आ, उ, ऊ, ओ, औ

4. मुखाकृति के आधार पर -

1. संवृत स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख वृत्त के समान बंद-सा रहता है, अर्थात् सबसे कम खुलता है, संवृत स्वर कहलाते हैं।

जैसे- इ, ई, उ, ऊ, ऋ

2. अर्द्ध संवृत स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख संवृत स्वरों की तुलना में आधा बंद-सा रहता है, अर्द्ध संवृत स्वर कहलाते हैं।

जैसे- ए, ओ

3. विवृत्त स्वर- विवृत का अर्थ होता है 'खुला हुआ', वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख्य पूरा खुला रहता है अर्थात सबसे ज्यादा खुला रहता है विवृत स्वर कहलाते हैं ।

जैसे- 'आ'

4. अर्द्ध विवृत्त - वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख विवृत स्वरों की तुलना में आधा और अर्द्ध-संवृत स्वरों की तुलना में ज्यादा खुला-सा रहता है, अर्द्ध विवृत स्वर कहलाते हैं।
जैसे- अ, ऐ, औ

5. नासिका के आधार पर-

1. निरनुनासिका स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में नासिका का प्रयोग नहीं किया जाता अर्थात् सिर्फ मुख से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ, निरनुनासिक कहलाती हैं।

जैसे- सभी स्वर

2. अनुनासिक स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में नासिक का प्रयोग किया जाता है, अर्थात मुख के साथ-साथ नासिक से भी उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ अनुनासिक। सानुनासिक कहलाती हैं।
जैसे- अँ, आँ, इँ, ईं, उँ, ऊँ, ऋँ, एँ, ऐं, ओं, औं

व्यंजनों का वर्गीकरण

1. **उच्चारण प्रयत्न के आधार पर-**
ध्वनियों के उच्चारण में होने वाले यत्न को 'प्रयत्न' कहा जाता है। यह प्रयत्न तीन प्रकार से होते हैं-

1. **स्वरतंत्री में कंपन्न**- स्वरतंत्रियो में होने वाली कंपन्न, नांद या गूंज के आधार पर व्यंजनों के दो भेद किए जाते हैं - सघोष और अघोष

अघोष वर्ण- जिन ध्वनियों के उच्चारण में भारीपन नहीं रहता है वे अघोष ध्वनियाँ कहलाती हैं।
वर्गीय व्यंजनों के पहले व दूसरे व्यंजन अघोष होते हैं। (क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ तथा ष, श, स)।

सघोष वर्ण- जिन ध्वनियों के उच्चारण में भारीपन रहता है वे सघोष ध्वनियां कहलाती है।
वर्गीय व्यंजनों का तीसरा, चौथा और पाँचवां व्यंजन 'सघोष होता है।
(ग, घ, ड़, ज, झ, ञ, ड़, ढ़, ण, द, ध, न, ब, भ, म)
अन्तः स्थ (य, र, ल, व) तथा ह । सभी स्वर भी घोष वर्ण होते हैं।

2. **श्वास वायु की मात्रा**- उच्चारण में वायु प्रक्षेप या श्वास वायु की मात्रा की दृष्टि से व्यंजनों के दो भेद हैं-

1. अल्पप्राण 2. महाप्राण

1. **अल्पप्राण**- जिनके उच्चारण में श्वास मुख से अल्प मात्रा में निकले और जिनमें 'हकार' जैसी ध्वनि नहीं होती, उन्हें अल्पप्राण ध्वनियाँ कहलाती है। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवा वर्ण अल्पप्राण व्यंजन है।

जैसे- क, ग, ड़, च, ज, ञ, ट, ड़, ण, त, द, न, प, ब, म।
अन्तस्थ (य, र, ल, व) तथा सभी स्वर भी अल्पप्राण ही हैं।

2. **महाप्राण**- महाप्राण व्यंजनों के उच्चारण में 'हकार' जैसी ध्वनि विशेष रूप से रहती है और श्वास अधिक मात्रा में निकलती है। प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण तथा समस्त ऊष्म वर्ण महाप्राण होते हैं।

जैसे- ख, घ, छ, झ, ठ, ढ़, थ, ध, फ, भ और ष, श, स, ह।

3. मुख अवयवों द्वारा श्वास को रोकने के रूप में-

ध्वनियों का उच्चारण करते समय हमारी जीव या अन्य मुख्य अवयव अनेक प्रकार से प्रयत्न करते हैं इस आधार पर व्यंजनों को निम्नलिखित विभाजन किया जाता है।

स्पर्शी व्यंजन- ये कंठ, तालु, मूर्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्ष से बोले जाते हैं इसलिए इन्हें स्पर्शी व्यंजन कहते हैं।

उदाहरणार्थ-
क वर्ग -क, ख, ग, घ, ड़ (कंठ से)
च वर्ग -च, छ, ज, झ, ञ (तालु से)
ट वर्ग - ट, ठ, ड़, ढ़, ण (मूर्धा से)
त वर्ग - त, थ, द, ध, न (दन्त से)
प वर्ग - प, फ, ब, भ, म (ओष्ठ से)

नासिक्य- जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुख-अवयव वायु को रोकते हैं परंतु वायु पूरी तरह मुख से न निकल कर नाक से भी निकलती है उन्हें नासिक्य व्यंजन कहते हैं। ड़, ञ, ण, न, म नासिक के व्यंजन है

स्पर्ष संघर्षी - जिन व्यंजन के उच्चारण में वायु पहले किसी मुख-अवयव से स्पर्श करती है, फिर रगड़ खाते हुए बाहर निकलती है उन्हें स्पर्शी संघर्षी व्यंजन कहते हैं।
च, छ, ज, झ स्पर्ष संघर्शी व्यंजन हैं।

संघर्षी - जिन व्यंजनों का उच्चारण एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्मा वायु से होता है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। यह चार हैं - ष, श, स, ह । इन्हें ही संघर्षी व्यंजन भी कहते हैं।

उत्क्षिप्त- उत्क्षिप्त शब्द का अर्थ है उछाला हुआ या फेंका हुआ। जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ का अग्रभाग मूर्धा को स्पर्ष करके झटके से वापस आता है उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन कहते हैं। ड़, ढ़ उत्क्षिप्त व्यंजन हैं।

अतःस्थ - स्वरों और व्यंजनों के मध्य स्थित होने के कारण य, र, ल, व को अंतस्थ व्यंजन कहा जाता है। अंतस्थ व्यंजनों का विभाजन निम्न है-

पार्श्विक - पार्श्विक का अर्थ है-बगल का। जिस ध्वनि के उच्चारण में जिह्वा श्वास वायु के मार्ग में खड़ी हो जाती है और वायु उसके अगल-बगल से निकल जाती है, उसे पार्श्विक व्यंजन कहते हैं। 'ल' पार्श्विक व्यंजन है।

प्रकंपित - प्रकंपित का अर्थ है कांपता हुआ। जिस व्यंजन के उच्चारण में जिह्वा की नोक वायु से रगड़ खाकर कांपती रहती है उसे प्रकंपित व्यंजन कहते हैं। 'र' प्रकंपित व्यंजन है।

लुण्ठित - 'र' को लुण्ठित व्यंजन कहते हैं क्योंकि 'र' के उच्चारण में जिह्वा लुढ़ककर स्पर्ष करती है।

अर्द्ध स्वर - हिंदी में य, व ऐसी ध्वनियाँ हैं जो न तो पूर्ण रूप से स्वर हैं, ना पूर्णरूपेण व्यंजन हैं। इनके उच्चारण में श्वास वायु को रोकने के लिए उच्चारण अवयव प्रयत्न तो करते हैं, लेकिन वह प्रयत्न न के बराबर होता है। अतः यह ध्वनियाँ लगभग अवरोध रहित निकल जाती है।

संयुक्त व्यंजन - हिंदी वर्णमाला में कुल ५ संयुक्त व्यंजन है।
क्ष (क्+ष) त्र (त्+र)
ज्ञ (ज्+ञ) श्र का सन्धि विच्छेद (श+र)

2. प्रयत्न स्थान के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

1. कण्ठ्य व्यंजन - क्, ख्, ग्, घ्, ड़्, ह्
कण्ठ्य व्यंजन तथा इनका उच्चारण स्थान कंठ है। ह और विसर्ग कंठ के थोड़ा नीचे काकल से बोली जाती है, इसलिए इन्हें काकल्य ध्वनि कहा जाता है।

2. तालव्य व्यंजन - च्, छ्, ज्, झ्, ञ, स्
ष् तालव्य व्यंजन है, इनका उच्चारण तालु के माध्यम से होता है। इनके उच्चारण में जीभ का अगला भाग ऊपर उठकर दांतों के मसूड़ों से ऊपर तालु को स्पर्ष करता है।

3. मूर्धन्य व्यंजन - ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, ड़्, ढ़्, र् मूर्धन्य व्यंजन है तथा इनका उच्चारण जीभ के अग्रभाग द्वारा मूर्धा (तालु का बीच उपर वाला ऊपर का कठोर भाग) को स्पर्ष करने से होता है।

4. दंत्य व्यंजन - त्, थ्, द्, ध् दंत्य व्यंजन है जो जीभ की ऊपर की नोक द्वारा ऊपर के दांतो को स्पर्श करने से उच्चारित होते हैं।

5. वर्त्स्य व्यंजन - न्, न्ह, ल्, स्, ज व्यंजन वर्त्स्य हैं। वर्त्स्य का अर्थ है मसूड़ा अतः ऊपर के दांतो से थोड़ा ऊपर मसूड़ों के साथ जीभ के स्पर्श से यह व्यंजन बोले जाते हैं। पारंपरिक रूप से न् एवं स् को दंत्य कहा जाता है, किंतु इनका वास्तविक उच्चारण स्थान दांतो से ऊपर है इसलिए इन्हें वर्त्स्य में सम्मिलित किया गया है।

6. ओष्ठ्य व्यंजन - प्, फ, ब्, भ् म्, व्, म्ह
दोनों ओठों को मिलाने पर बोले जाते हैं इसलिए इन्हें ओष्ठ्य कहा जाता है।

(5) दु- हीन, बुरा
(6) नि – अभाव, विशेष, निषेध
(7) बिन – निषेध , अभाव
(8) भर – ठीक, पूरा
(9) कु (क)- बुरा , हीन
(10) सु (स)- श्रेष्ठ , साथ, सुन्दर

उर्दू उपसर्ग –(19)

(1) अल (अरबी), निश्चित
(2) ऐन – ठीक , पूरा
(3) कम – थोडा , हिन
(4) खुश – अच्छा ,शुभ
(5) गैर – भिन्न , विरुद्ध ,
(6) दर – में
(7) ना – अभाव, कम
(8) फ़िल – में, फी (अरबी) में प्रति
(9) ब – अनुसार , में, से ओर
(10) बद – बुरा , अशुभ
(11) बर – ऊपर , पर
(12) बा – साथ ,अनुसार
(13) बिल (अरबी)- साथ, से , में
(14) बिला (अरबी)- बिना
(15) बे – बिना, अभाव
(16) ला (अरबी) – बिना , निषेध , अभाव
(17) सर – मुख्य ,श्रेष्ठ
(18) हम (संस्कृत संम से) – साथ समान
(19) हर – प्रत्येक

नोट – उर्दू के सारे उपसर्ग अरबी – फारसी से लिए गए हैं ये संख्या में लगभग (19) है ।

अध्याय – 5

सामासिक पदों की रचना और समास - विग्रह

⇒ **समास का शाब्दिक अर्थ** - जोड़ना या मिलाना। अर्थात समास प्रक्रिया में दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में मिलाकर एक शब्द बनाया जाता है।

⇒ दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए नए सार्थक शब्द को समास कहते हैं।

⇒ **समस्त पद (सामासिक पद)**-समास के नियमों का पालन करते हुए जो शब्द बनता है उसे समास पद या सामासिक,पद कहते हैं।

⇒ समस्त पद के सभी पदों को अलग अलग किए जाने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहलाती है।

⇒ समास वह शब्द रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते है।

सामासिक शब्द में आए दो पदों में पहले पद को पूर्वपद तथा दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं। ।

जैसे:-

गंगाजल	गंगाजल	-	गंगा का जल
गंगा	जल		गंगा जल
(पूर्वपद)	(उत्तरपद)		(समस्त पद) (समास विग्रह)

कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रस्तुत कर देना ही समास का प्रमुख उद्देश्य होता है।

समास 6 प्रकार के होते हैं

समास के प्रकार Types Of Compound

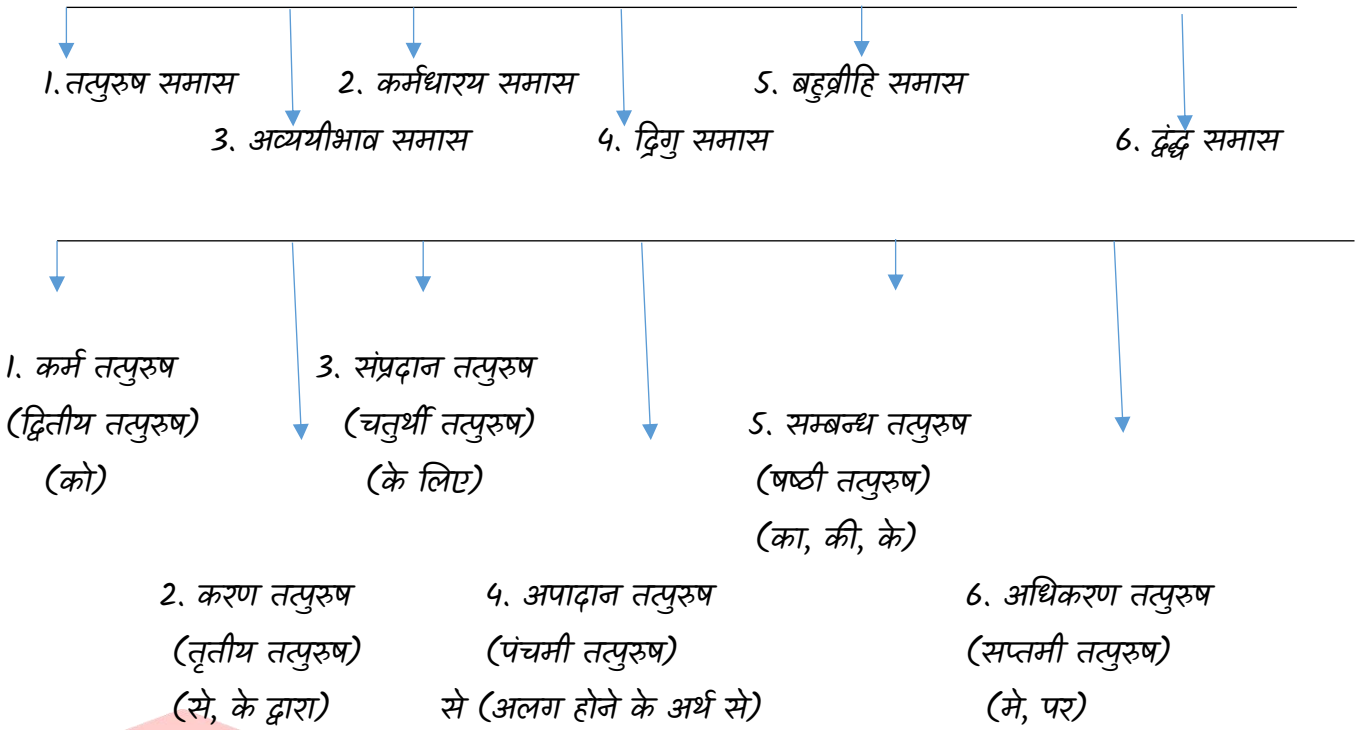

पद की प्रधानता के आधार पर समास का वर्गीकरण

(क) पूर्वपद प्रधान –अव्ययीभाव

(ख) उत्तर पद प्रधान - तत्पुरुष, कर्मधारय और द्विगु

(ग) दोनों पद प्रधान-द्वन्द्व

(घ) दोनों पद अप्रधान - बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)

नोट:

भारतीय भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके रुप में लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तन या विकार उत्पन्न नहीं होता है, उन्हें अव्यय शब्द या अविकारी शब्द कहते हैं।

अर्थात ऐसे शब्द जिनका व्यय ना हो, उन्हे अव्यय शब्द कहते हैं।

जैसे – यथा, तथा, यदा, कदा, आ, प्रति , जब, तब, भर, यावत , हर आदि।

(1) अव्ययीभाव समास Adverbial Compound

जिस समास में पहला पद अर्थात पूर्वपद प्रधान तथा अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

पहचान- सामासिक पद (समस्त पद) मे यथा, आ, अनु, प्रति, भर, तथा, यदा, कदा, जब, तब, यावत, हर आदि शब्द आते हैं।

समस्त पद	-	विग्रह
आजन्म	-	जन्म से लेकर
आमरण	-	मरने तक
आसेतु	-	सेतु तक
आजीवन	-	जीवन भर
अनपढ़	-	बिना पढ़ा
आसमुद्र	-	समुद्र तक
अनुरुप	-	रुपके योग्य
अपादमस्तक	-	पाद से मस्तक तक
यथासंभव	-	जैसा सम्भव हो/जितना सम्भव हो सके
यथोचित	-	उचित रुप मे/जो उचित हो
यथा विधि	-	विधि के अनुसार

यथामति	-	मति के अनुसार
यथाशक्ति	-	शक्ति के अनुसार
यथानियम	-	नियम के अनुसार
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
यथासमय	-	समय के अनुसार
यथासामर्थ	-	सामर्थ के अनुसार
यथाक्रम	-	क्रम के अनुसार
प्रतिकूल	-	इच्छा के विरुद्ध
प्रतिमाह	-	प्रत्येक -माह
प्रति दिन	-	प्रत्येक - दिन
भरपेट	-	पेट भर के
हाथों हाथ	-	हाथ ही हाथ में/ (एक हाथ से दूसरे हाथ)
परम्परागत	-	परम्परा के अनुसार
थल - थल	-	प्रत्येक स्थान पर
बोटी – बोटी	-	प्रत्येक बोटी
नभ –नभ	-	पूरे नभ में
रंग - रंग	-	प्रत्येक रंग के
मीठा – मीठा	-	बहुत मीठा
चुप्प –चुप्प	-	बिल्कुल चुपचाप
आगे- आगे	-	बिल्कुल आगे
गली – गली	-	प्रत्येक गली
दूर - दूर	-	बिल्कुल दूर
सुबह - सुबह	-	बिल्कुल सुबह
एकाएक	-	एक के बाद एक
दिनभर	-	पूरे दिन
दो – दो	-	दोनों दो / प्रत्येक दोनों
रोम- रोम	-	पूरे रोम मे
नए – नए	-	बिल्कुल नए
हरे - हरे	-	बिल्कुल हरे
बारी – बारी	-	एक एक करके / प्रत्येक करके
बे – मारे	-	बिना मारे
जगह – जगह	-	प्रत्येक जगह

मील – भर	-	पूरे मील
गरमागरम	-	बहुत गरम
पतली-पतली	-	बहुत पतली
हफ्ता भर	-	पूरे हफ्ते
प्रति एक	-	प्रत्येक
एक - एक	-	हर एक / प्रत्येक
धीरे – धीरे	-	बहुत धीरे
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग
मनचाहे	-	मन के अनुसार
छोटे – छोटे	-	बहुत छोटे
भरे - पूरे	-	पूरा भरा हुआ
जानलेवा	-	जान लेने वाली
दूरबीन	-	दूर देखने वाली
सहपाठी	-	साथ पढ़ने वाला/वाली
खुला – खुला	-	बहुत खुला
कोना-कोना	-	सारा कोना
मात्र	-	केवल एक
भरा-भरा	-	बहुत भरा
शुरू – शुरू	-	बहुत आरंभ/शुरु में
अंग- अंग	-	प्रत्येक अंग
अहैतुक	-	बिना किसी कारण के
प्रतिवर्ष	-	वर्ष – वर्ष /हर वर्ष
छातीभर	-	छाती तक
बार-बार	-	बहुत बार
देखते - देखते	-	देखते ही देखते
एकदम	-	अचानक से
रात-रात	-	पूरी रात भर
सालों-साल	-	बहुत साल
रातों-रात	-	बहुत रात
ड़रा – ड़रा	-	बहुत ड़रा
तरह- तरह	-	बहुत तरह के
भरपूर	-	पूरा भर के
सालभर	-	पूरे साल

घर-घर	-	प्रत्येक घर
नए-नए	-	बिल्कुल नए
घूमता- घूमता	-	बहुत घूमता
बेशक	-	बिना शक के
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग
अकारण	-	बिना कारण के
घड़ी-घड़ी	-	हर घड़ी
पहले-पहले	-	सबसे पहले
भरसक	-	पूरी शक्ति से
बखूबी	-	खूबी के साथ
निः सन्देह	-	सन्देह के बिना
बेअसर	-	असर के बिना
सादर	-	आदर के साथ
बेकाम	-	बिना काम के
अनजान	-	बिना जाने
प्रत्यक्ष	-	आँख के सामने
बेफायदा	-	फायदे के बिना
बाकायदा	-	कायदे के अनुसार
बेखटके	-	बिना खटके के
निड़र	-	ड़र के बिना
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
प्रतिध्वनि	-	ध्वनि की ध्वनि

(2) <u>तत्पुरुष समास Determinative compound</u>

जिस समास मे बाद का अथवा उत्तरपद प्रधान होता है एवं पूर्व पद गौण होता है तथा दोनों पदो वे बीच का कारक- चिन्ह लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते है। तत्पुरुष समास छः प्रकार के होते हैं, जो निम्नलिखित हैं-

[1]कर्मतत्पुरुष समास (द्वितीय तत्पुरुष):- जिस तत्पुरुष समास में कर्मकारक की विभक्ति 'को' लुप्त हो जाती है, वहाँ कर्मतत्पुरुष समास है। जैसे –

समस्त पद	-	**विग्रह**
गगनचुम्बी	-	गगन को चूमने वाला
यश प्राप्त	-	यश को प्राप्त
चिड़ीमार	-	चिड़ियों को मारने वाला
ग्रामगत	-	ग्राम को गया हुआ
रथचालक	-	रथ को चलाने वाला
जेबकतरा	-	जेब को काटने वाला
जनप्रिया	-	जन को प्रिय
स्वर्गीय	-	स्वर्ग को गया
वनगमन	-	वन को गमन
सर्वप्रिय	-	सब को प्रिय
गिरहकट	-	गिरह को काटने वाला गिरह / गांठ
अतिथ्यर्पण	-	अतिथि को अर्पण
गृहागत	-	घर को गया हुआ
मरणासन्न	-	मरण को पहुंचा हुआ
परलोकगमन	-	परलोक को गमन
स्वर्गगत	-	स्वर्ग को गत (गया हुआ)
शरणागत	-	शरण को आगत
भयप्राप्त	-	भय को प्राप्त
स्वर्ग प्राप्त	-	स्वर्ग को प्राप्त
आशातीत	-	आशा को अतीत
मनपसन्द	-	मन को पसन्द
रूपधारी	-	रूप को धारण करने वाला
वर दिखाई	-	वर को दिखाना
मर्म भेदी	-	दिल को भेदने वाला
कार्यकर्ता	-	कार्य को करने वाला
रात जगा	-	रात को जगा हुआ
कठफोड़वा	-	काठ (लकड़ी)को फोड़ने वाला
देशगत	-	देश को गत (गया हुआ)
पाकिटमार	-	पाकिट को मारने (काटने) वाला
विरोधजनक	-	विरोध को जन्म देने वाला
दिल तोड़	-	दिल को तोड़ने वाला
आपत्तिजनक	-	आपति को जन्म देने वाला
हस्तगत	-	हस्त को गया हुआ
प्राप्तोदक	-	उदक (जल) को प्राप्त तक

देशाटन	-	देश में अटन (भ्रमण)
नीति-निपुण	-	नीति में निपुण
हथकड़ी	-	हाथ में पहनने वाली कड़ी
घर बैठे	-	घर में बैठे
वनमानुष	-	वन में निवास करने वाले मानुष
जीवदया	-	जीवों पर दया
घृतान्न	-	घी में पका हुआ अन्न
कविपुंगल	-	कवियों में श्रेष्ठ

नोट :-

तत्पुरुष समास के उपयुक्त प्रकार के अलावा पाँच अन्य प्रकार भी होते हैं, जो नीचे दिए गए हैं।

I) नञ तत्पुरुष समास :-

जिस समास के पूर्व पद में निषेधसूचक अथवा नकारात्मक शब्द अ , अन् , न , ना , गैर आदि लगे हों, उसे नञ तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे :-

समस्त पद	-	विग्रह
अनादर	-	न आदर
अनहोनी	-	न होनी / नहीं जो होनी चाहिए
अन्याय	-	न्याय का ना होना
अनागत	-	न आगत
अधर्म	-	धर्म हीन / नहीं जो धर्म
अनादि	-	आदि रहित
अस्थिर	-	न स्थिर
अज्ञान	-	न ज्ञान
अनिच्छा	-	न इच्छा
अपूर्ण	-	न पूर्ण
अनर्थ	-	अर्थ हीन / नहीं हो जो अर्थ के / बिना अर्थ के
अनश्वर	-	न नश्वर
नीरस	-	न रस
अब्राह्मण	-	न ब्राह्मण
अनुपस्थित	-	न उपस्थित
अज्ञात	-	न ज्ञात
असत्य	-	न सत्य
अनदेखी	-	न देखी
नास्तिक	-	न आस्तिक
अयोग्य	-	न योग्य
असुंदर	-	न सुंदर
अनाथ	-	बिना नाथ के
असंभव	-	न संभव / नहीं हो जो संभव
अनावश्यक	-	न आवश्यक / नहीं हो जो आवश्यक
ना पसंद	-	न पसंद
नावाजिब	-	न वाजिब

[3] कर्मधारय समास (Appositional Compound):-

जिस समास पद का उत्तर पद प्रधान हो तथा पूर्व पद तथा उत्तर पद में उपमान-उपमेय अथवा विशेषण-विशेष्यसंबंध हो, कर्मधारय समास कहलाता है।

आसानी से समझने के लिए कर्मधारय समास को दो प्रकारों में बांटा गया है।

इस प्रकार में पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद संज्ञा या सर्वनाम अर्थात विशेष्य होता है।

पहचान:- कर्मधारय समास के विग्रह में "जो" शब्द आता है।

समस्त पद	-	विग्रह
महाकवि	-	महान है जो कवि

(व्याख्या :- यहां महान विशेषण तथा कवि विशेष्य है)

महापुरुष	-	महान है जो पुरुष
महौषध	-	महान है जो औषध
पीतसागर	-	पीत (पीला) है जो सागर

नीलकमल - नील (नीला) हैजो कमल
नीलांबर - नीला है जो अंबर
नीलोत्पल - नील (नीला) है जो उत्पल (कमल)
लालमणि - लाल है जो मणि
नीलकंठ - नीला है जो कंठ
महादेव - महान है जो देव
अधमरा - आधा है जो मरा
परमानंद - परम है जो आनंद
सुकर्म - सुंदर है जो कर्म
सज्जन - सच्चा है जो जन
लालटोपी - लाल है जो टोपी
महाविद्यालय - महान है जो विद्यालय
कृष्णसर्प - काला है जो सर्प (सांप)
शुभगमन - शुभ है जो आगमन
महावीर - महान है जो वीर
काली मिर्च - काली है जो मिर्च
महेश - महान है जो ईश
महायुद्ध - महान है जो युद्ध

नोट :- कुछ कर्मधारय समास के उदाहरणों में पहला पद विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) तथा उत्तर पद विशेषण होता है। इनके विग्रह में भी "जो" शब्द आता है।

जैसे:-

समस्त पद - विग्रह

पुरुषोत्तम - पुरुषों में जो है उत्तम
घनश्याम - घन (बादल) है जो शाम (काला)
नराधम (नर+अधम) - नारे (व्यक्ति) है जो अधम (नीच)

जब एक पद उपमान (जिससे तुलना की जा रही है) तथा दूसरा पद उपमेय (जिसकी तुलना की जा रही है),वहां भी कर्मधारय समास होता है।

पहचान:- कर्मधारय समास के विग्रह में 'के समान', 'रूपी' अथवा 'जैसा' शब्द आते हैं।

समस्त पद - विग्रह

विद्याधन - विद्यारूपी धन (विद्या के समान धन)
राजीवनयन (राजीव + नयन) - राजीव अर्थात् कमल जैसे नयन
कमलाक्षी (कमल + अक्षी) - कमल जैसी आंखों वाली
कंबू ग्रीवा (कंबू + ग्रीवा) - कबूतर जैसी गर्दन वाली
कर कमल (कर + कमल) -कमल के समान कर (हाथ)
मुख चंद्र(मुख + चंद्र) - चंद्र सा मुख (चंद्र के समान मुख)
देहलता (देह + लता) - लता जैसी देह (शरीर)
वचनामृत (वचन + अमृत) - अमृत तुल्य वचन (अमृत के समान वचन)
कन्यारत्न (कन्या + रत्न - रत्न जैसी कन्या
मृगनयनी (मृग + नयनी) - मृग जैसे नयन
चंद्रमुखी (चन्द्र + मुखी) - चंद्र के समान मुख
शूरवीर (शूर + वीर) - शूर के समान वीर
कुसुमकपोल (कुसुम + कपोल) - कुसुम (फूल) के समान कपोल (गाल)
स्त्रीरत्न (स्त्री + रत्न) - स्त्री रूपी रत्न
क्रोधाग्नि (क्रोध + अग्नि) - क्रोध रूपी अग्नि
नृसिंह (नृ + सिंह) - सिंह रूपी नर
ग्रंथरत्न (ग्रंथ + रत्न) - ग्रंथ रूपी रत्न
कमल नयन (कमल + नयन) - कमल के समान नयन
चरण कमल (चरण + कमल) - कमल के समान चरण
नयनबाण (नयन + बाण) - नयन रूपी बाण
प्राण प्रिय (प्राण + प्रिय) - प्राणों के समान प्रिय

मध्यलोपी कर्मधारय समास :-

पूर्वपद तथा उत्तर पद में सम्बन्ध बताने वाले पद का लोप हो जाता है।

। साथ ही मुख्य क्रिया के पूर्ण कृदन्ती क्रमों के बाद संयोगी क्रिया 'जा' लगती हैं ।

1. मैं अब चल नहीं पाता । 1. मुझ से अब चला नहीं जाता ।

2.गर्मियों में लोग खूब नहाते हैं । 2. गर्मियों में खूब नहाया जाता है ।

3. वे गा नहीं सकते । 3. उनसे गाया नहीं जा सकता ।

iii. **कर्मवाच्य/भाववाच्य से कर्त्तृवाच्य बनाना:** कर्त्तृवाच्य में कर्ता की प्रधानता होती है जबकि कर्मवाच्य में कर्म की अतः कर्मवाच्य से कर्त्तृवाच्य बनाते समय पुनः कर्ता के अनुसार क्रिया प्रयुक्त कर देंगे । जैसे

1. उसके द्वारा पत्र लिखा जाएगा । 1. वह पत्र लिखेगा ।

2. बच्चों द्वारा चित्र बनाए गए । 2. बच्चों ने चित्र बनाए।

3. गधे द्वारा बोझा ढोया गया । 3. गधे ने बोझा ढोया ।

अध्याय – 13

अव्यय (अविकारी शब्द)

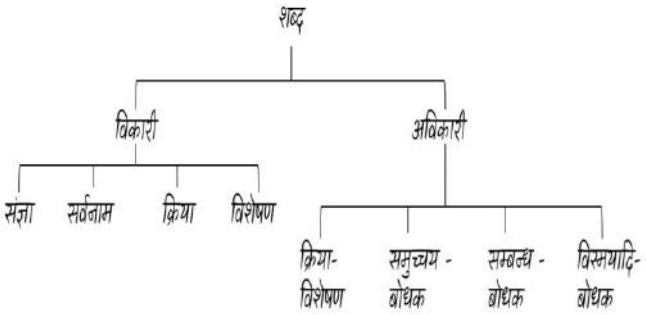

अविकारी या अव्यय शब्द

परिभाषा- "न व्ययेति इति अव्ययम्" के अनुसार अविकारी या अव्यय उन शब्दों को कहते हैं जिन शब्दों का रूप (लिंग, वचन, क्रिया, विभक्ति में) परिवर्तन नहीं होता अर्थात इन शब्दों पर काल, वचन, लिंग, पुरुष आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ये शब्द जहाँ भी प्रयुक्त होते हैं, वहाँ एक ही रूप में रहते हैं। ये शब्द अव्ययीभाव समास के उदाहरण कहलाते हैं। जैसे- अन्दर बाहर, अनुसार, अधीन, इसलिए, यद्यपि, तथापि, परन्तु आदि। इनके अतिरिक्त अनेक उदाहरण हैं, दिए गए शब्दों का रूप परिवर्तन नहीं किया जा सकता जैसे अन्दर का अन्दरी, अन्दरे, अन्दरा रूप नहीं बन सकता। अतः अव्यय या अवकिारी शब्द हैं। अविकारी शब्दों को सुविधा, स्वरूप और व्यवस्था की दृष्टि से चार भागों में बाँटा गया हैं।

1. क्रिया-विशेषण

जो शब्द क्रिया के अर्थ में विशेषता प्रकट करते हैं, वे क्रिया विशेषण अविकारी शब्द कहलाते हैं।

जैसे- 1. वह प्रतिदिन पढ़ता है

2. कुछ खा लो।

3. मोहन सुन्दर लिखता हैं।

4. घोड़ा तेज दौड़ता है।

इन उदाहरणों में प्रतिदिन कुछ सुन्दर, तेज शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट कर रहें हैं। अतः में शब्द क्रियाविशेषण हैं। क्रिया-विशेषण के चार मुख्य भेद हैं-

(i) कालवाचक (ii) स्थानवाचक

(iii) परिमाणवाचक (iv) रीतिवाचक

कालवाचक- जो क्रिया-विशेषण शब्द क्रिया के होने का समय सूचित करते हैं, उसे कालवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे- 1. सीता कल आएगी।

2. तुम अब जा सकते हो।

3. दिन भर पानी बरसता रहा।

4. तुम प्रतिदिन समय पर आते हो।

वाक्यों में कल, अब, दिनभर, दिन-प्रतिदिन शब्द क्रिया की विशेषता बतला रहे हैं अतः काल वाचक क्रिया-विशेषण हैं।

स्थानवाचक क्रिया-विशेषण- जो शब्द क्रिया के स्थान या दिशा का ज्ञान कराएँ उन्हें स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे- 1. वह पेड़ के नीचे बैठा है।

2. तुम आगे चलो।

3. हमारे आस-पास रहना।

4. इधर-उधर मत भागो।

इन वाक्यों में आगे, आस-पास, नीचे, इधर-उधर, स्थानवाचक क्रिया विशेषण शब्द हैं।

परिमाण वाचक- जिन क्रिया-विशेषण शब्दों से क्रिया की अधिकता-न्यूनता आदि परिमाण का पता लगे अर्थात नाप-तोल बतलाते हैं, वे परिमाण वाचक क्रियाविशेषण शब्द कहलाते हैं।

जैसे- 1. उतना खाओं, जितना आवश्यक हो।

2. कुछ तेज चलो।

3. रमेश बहुत बोलता है।

4. तुम खूब खेलो।

आदि उदाहरणों में उतना, जितना, कुछ, बहुत, खूब आदि परिमाण वाचक क्रिया-विशेषण अव्यय हैं।

रीतिवाचक- जिन क्रिया विशेषण शब्दों से क्रिया की रीति या विधि का पता चले उन शब्दों को रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते है-रीतिवाचक विशेषण निम्न अर्थों में आते हैं-

प्रकारात्मक- धीरे-धीरे अचानक, अनायास, संयोग से, एकाएक, सहसा, सुखपूर्वक शान्ति से, हँसता हुआ, मन से, धड़ाधड़ झटपट, आप ही आप, शीघ्रता से, ध्यानपूर्वक, जल्दी, तुरन्त आदि।

निश्चयात्मक- अवश्य, ठीक, सचमुच, अलबत्ता, वास्तव में, बेशक, निःसंदेह आदि।

अनिश्चयात्मक- कदाचित्, शायद, सम्भव है, बहुत करके, प्रायः, अक्सर आदि।

स्वीकारात्मक- हाँ, ठीक, सच, बिलकुल, सही, बिलकुल सही, जी हाँ, आदि।

कारणात्मक (हेतु)- इसलिए, अतएव, क्यों किसलिए, काहे को, अतः आदि कारणात्मक या हेतु क्रिया-विशेषण हैं।

निषेधात्मक- न, ना, नहीं, मत, बिलकुल नहीं, हरगिज नहीं, जी नहीं आदि।

आवृत्यात्मक- गटागट, फटाफट, खुल्लमखुल्ला आदि।

अवधारक - ही, तो, भी, तक, भर, मात्र, अभी, कभी, जभी, तभी, आदि।

क्रिया विशेषणों की रचना

मूल क्रिया विशेषणों के अतिरिक्त प्रत्यय, समास आदि के योग से भी कुछ क्रिया-विशेषण शब्दों की रचना होती है। जिन्हें यौगिक क्रिया-विशेषण कहा जाता है। ये निम्न प्रकार हैं-

संज्ञा से- प्रेमपूर्वक, कुशलतापूर्वक, दिन-भर, रात तक, सवेरे, सायं, आदि संज्ञा शब्दों के योग से बने हैं।

सर्वनाम से- यहाँ, वहाँ, अब, जब, जिससे, इसलिए, जिस पर, ज्यों, त्यों, जैसे-वैसे, जहाँ-वहाँ आदि।

विशेषण से- धीरे, चुपके, इतने में, ऐसे, वैसे, कैसे, जैसे, पहले, दूसरे प्रायः बहुधा आदि।

क्रिया से- चलते-चलते, उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते-जागते, करते हुए, लौटते हुए, जाते-जाते आदि।

शब्दों की पुनरुक्ति से- हाथों-हाथ, बीचों-बीच, घर-घर, साफ-साफ, कभी-कभी, क्षण-क्षण, पल-पल, धड़ाधड़ आदि।

विलोमशब्दों के योग से रात-दिन, साँझ-सवेरे, देश-विदेश, उल्टा-सीधा, छोटा-बडा, आदि।

तः प्रत्याना- सामान्यतः, वस्तुतः, साधारणतः, येन केन, प्रकारेण (जैसे-तैसे) आदि।

बिना प्रत्ययान्त के- कभी-कभी, संज्ञा, सर्वनाम विशेषण आदि के बिना किसी प्रत्यय के, क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं- जैसे-

संज्ञा (1) तू सिर पड़ेगा।

149. पढ़े फारसी बेचे तेल, देखो यह विधना का खेल
= शिक्षित होते हुए भी दुर्भाग्य से निम्न कार्य करना।

150. पराधीन सपनेहु सुख नाहीं = परतंत्र व्यक्ति कभी सुखी नहीं होता।

अध्याय – 18

शब्द – शुद्धि

भाषा में शुद्ध उच्चारण के साथ शुद्ध वर्तनी का भी महत्त्व होता है। अशुद्ध वर्तनी से भाषा का सौन्दर्य तो नष्ट होता ही है, कहीं कहीं तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। वर्तनी अशुद्धि के कई कारण हो सकते हैं यथा-

1. स्वरागम के कारण :- निम्न शब्दों में किसी वर्ण के साथ अनावश्यक स्वर प्रयुक्त हो जाने से वर्तनी अशुद्ध हो जाती है अतः उसे हटा कर वर्तनी शुद्ध की जा सकती है।

अशुद्ध वर्तनी	=	**शुद्धवर्तनी**
अत्याधिक	=	अत्यधिक
आधीन	=	अधीन
अभ्यार्थी	=	अभ्यर्थी
अनाधिकार	=	अनधिकार
अहिल्या	=	अहल्या
दुरावस्था	=	दुरवस्था
शमशान	=	श्मशान
गत्यावरोध	=	गत्यवरोध
प्रदर्शिनी	=	प्रदर्शनी
द्वारिका	=	द्वारका
वापिस	=	वापस
घुटना	=	घुटना
व्यौपारी	=	व्यापारी
भागीरथ	=	भगीरथ

2. स्वरलोप के कारण : उचित स्वर के अभाव के कारण

आखरी	=	आखिरी
आप्लवित	=	आप्लावित
कुटम्ब	=	कुटुम्ब
दुगनी	=	दुगुनी
जलूस	=	जुलूस
बदाम	=	बादाम
मैथली	=	मैथिली
विपन्नवस्था	=	विपन्नावस्था
अगामी	=	आगामी
सतरंगनी	=	सतरंगिनी
गोरव	=	गौरव
युधिष्ठर	=	युधिष्ठिर
महात्म्य	=	माहात्म्य
अव्यक्षरी	=	अव्याक्षरी

आजीवका	=	आजीविका
फिटकरी	=	फिटकिरी
कुमुदनी	=	कुमुदिनी
विरहणी	=	विरहिणी
स्वस्थ्य	=	स्वास्थ्य
वाहनी	=	वाहिनी
वयवृद्ध	=	वयोवृद्ध
पारितोषक	=	पारितोषिक
मुकट	=	मुकुट
भगीरथी	=	भागीरथी
अजानु	=	आजानु
अष्टवक्र	=	अष्टावक्र
उन्नतशील	=	उन्नतिशील
जमाता	=	जामाता
अतिश्योक्ति	=	अतिशयोक्ति
नृत्यंगना	=	नृत्यांगना
मुकन्द	=	मुकुन्द
लोकिक	=	लौकिक

3. <u>व्यंजनागम के कारण</u> : शब्द में अनावश्यक व्यंजन के प्रयुक्त हो जाने से भी वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

अवन्नति	=	अवनति
प्रज्वलित	=	प्रज्वलित
बुद्धवार	=	बुधवार
अन्तर्ध्यान	=	अन्तर्धान
सदृश्य	=	सदृश
पूज्यनीय	=	पूजनीय
निश्च्छल	=	निश्छल
श्राप	=	शाप
समुन्द्र	=	समुद्र
निद्रित	=	निन्द्रित
केन्द्रीयकरण	=	केन्द्रीकरण
कुत्तिया	=	कुतिया
शुभेच्छुक	=	शुभेच्छु
गोवर्द्धन	=	गोवर्धन
कृत्य-कृत्य	=	कृत-कृत्य
षष्ठम्	=	षष्ठ

4. <u>व्यंजन लोप के कारण</u> : किसी वर्तनी में व्यंजन के न लिखने पर वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

अध्यन	=	अध्ययन
ईर्ष्या	=	ईर्षा
उमीदवार	=	उम्मीदवार
तदन्तर	=	तदनन्तर
व्यंग	=	व्यंग्य
सामर्थ	=	सामर्थ्य
उछृंखल	=	उच्छृखल
द्वन्द	=	द्वन्द्व
उद्देश	=	उद्देश्य
उत्पन	=	उत्पन्न
महत्व	=	महत्त्व
समुनयन	=	समुन्नयन
समुचय	=	समुच्चय
मिष्टान	=	मिष्टान्न
इन्द्रा	=	इन्दिरा
उलंघन	=	उल्लंघन
उपलक्ष	=	उपलक्ष्य
चार दीवारी	=	चहार दीवारी
तरुछाया	=	तरुच्छाया
स्तनपान	=	स्तन्य पान
आर्द	=	आर्द्र
तत्वाधान	=	तत्त्वावधान
निरलम्ब	=	निरवलम्ब
श्रेयकर	=	श्रेयस्कर
राजाभिषेक	=	राज्याभिषेक
स्वालम्बन	=	स्वावलम्बन
स्वातन्त्र	=	स्वातन्त्रय
योधा	=	योद्धा
द्विधा	=	द्विविधा

5. वर्णक्रम भंग के कारण वर्तनी में किसी वर्ण का क्रम बदलने पर अर्थात् वर्ण का क्रम आगे पीछे होने पर वर्तनी अशुद्ध हो जायेगी। यथा-

अथिति	=	अतिथि
चिन्ह	=	चिह्न
मध्यान्ह	=	मध्याह्न
ब्रम्हा	=	ब्रह्मा
आव्हान	=	आह्वान
जिव्हा	=	जिह्वा
गव्हर	=	गह्वर
आन्नद	=	आनन्द
आल्हाद	=	आह्लाद
प्रसंशा	=	प्रशंसा
अलम	=	अमल
मतबल	=	मतलब

6. <u>वर्णपरिवर्तन के कारण</u> : किसी वर्तनी में किसी वर्ण के स्थान पर दूसरा वर्ण लिख देने पर वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

बतक	=	बतख
दस्तकत	=	दस्तखत
जुखाम	=	जुकाम
ऊँगना	=	ऊँघना
संगटन	=	संघटन
मेगनाद	=	मेघनाद
संघठन	=	संगठन

रिमजिम	=	रिमझिम
यथेष्ठ	=	यथेष्ट
सन्तुष्ठ	=	सन्तुष्ट
मिष्ठान्न	=	मिष्टान्न
परिशिष्ठ	=	परिशिष्ट
संश्लिष्ठ	=	संश्लिष्ट
बलिष्ट	=	बलिष्ठ
कनिष्ट	=	कनिष्ठ
कटहरा	=	कठहरा
बसिष्ट	=	वसिष्ठ
युधिष्टिर	=	युधिष्ठिर
कुष्ट	=	कुष्ठ
सीड़ी	=	सीढ़ी
धनाड्य	=	धनाढ्य
रामायन	=	रामायण
ऋन	=	ऋण
पुन्य	=	पुण्य
सुश्रूषा	=	शुश्रूषा
अवकास	=	अवकाश
आशीश	=	आशीष
शोडशी	=	षोडशी
आमिश	=	आमिष
कैलाश	=	कैलास
विध्वंश	=	विध्वंस
पुरष्कार	=	पुरस्कार
निसिद्ध	=	निषिद्ध
विध्यालय	=	विद्यालय

7. पंचम् वर्ण/अनुस्वार एवं चन्द्रबिन्दु के कारण किसी वर्ग के अन्तिम नासिक्य वर्ण के स्थान पर अन्य नासिक्य वर्ण लगाने या सही स्थान पर अनुस्वार नहीं लगाने तथा उचित स्थान पर चन्द्रबिन्दु का उपयोग न करने से भी वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

वांगमय	=	वाङ्मय
चन्चल	=	चंचल
मन्डल	=	मण्डल
षन्मुख	=	षण्मुख
सन्यासी	=	संन्यासी
एंकाकी	=	एकांकी
इन्होनें	=	इन्होंने
उन्नीसवी	=	उन्नीसवीं
करेगें	=	करेंगे
स्वयम्वर	=	स्वयंवर
सम्वर्धन	=	संवर्धन
क्रांन्ति	=	क्रान्ति
आंख	=	आँख
हंसी	=	हँसी
ऊंट	=	ऊँट
आंधी	=	आँधी
पहुंच	=	पहुँच
सांझ	=	साँझ
ऊंचाई	=	ऊँचाई
जाऊंगा	=	जाऊँगा
ढूंढना	=	ढूँढना
दांत	=	दाँत
कुआँ	=	कुंआ
दिनाँक	=	दिनांक
दुनियाँ	=	दुनिया
पांच	=	पाँच

10. **<u>रेफ सम्बन्धी</u>** : र् रेफ के रूप में उचित वर्ण पर न लगाने से भी वर्तनी अशुद्ध हो जाती है। "र् रेफ के रूप में उस वर्ण पर लगाना चाहिए, जिस वर्ण से पूर्व 'र' का उच्चारण होता है।

आर्शीवाद	=	आशीर्वाद
उर्तीण	=	उत्तीर्ण
आकर्षर्ण	=	आकर्षण
प्रार्दुभाव	=	प्रादुर्भाव
दर्शनीय	=	दर्शनीय
गर्वनर	=	गवर्नर
अर्न्तभाव	=	अन्तर्भाव
अर्न्तगत	=	अन्तर्गत
मुर्हरम	=	मुहर्रम
आर्युवेद	=	आयुर्वेद
दुव्यर्सन	=	दुर्व्यसन
शार्गीद	=	शागीर्द
पुर्नजन्म	=	पुनर्जन्म
प्रर्वतक	=	प्रवर्तक

9. **<u>ऋ के स्थान पर र (.) के प्रयोग के कारण</u>**

श्रृंगार	=	शृंगार
स्रष्टि	=	सृष्टि
द्रश्य	=	दृश्य
अनुग्रहीत	=	अनुगृहीत
पैत्रिक	=	पैतृक
द्रष्टि	=	दृष्टि
ग्रहिणी	=	गृहिणी
प्रक्रति	=	प्रकृति
भ्रंग	=	भृग
जाग्रति	=	जागृति
संग्रहीत	=	संगृहीत
श्रंग	=	शृंग
ग्रहीत	=	गृहीत
तिरस्क्रत	=	तिरस्कृत
भ्रत्य	=	भृत्य
सम्रद्ध	=	समृद्ध

अध्याय – 23

वाक्यांशों के स्थान पर एक शब्द

'अ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जो सबके आगे रहता हो - अग्रणी
- किसी आदरणीय का स्वागत करने के लिए चलकर कुछ आगे पहुँचना - अगवानी
- जिसकी गहराई या थाह का पता न लग सके - अगाध
- जो गाये जाने योग्य न हो - अगेय
- जो छेदा न जा सके - अछेद्य
- जिसका कोई शत्रु पैदा ही न हुआ हो - अजातशत्रु
- जिसे जीता न जा सके – अजेय
- जिसके खंड या टुकड़े न किये गये हों - अखंडित
- जो खाने योग्य न हो - अखाद्य
- जो गिना ना जा सके - अगणित/अनगिनत
- जिसके अंदर या पास न पहुँचा जा सके - अगम्य
- जिसके पास कुछ भी न हो - अकिंचन
- जिसमें कुछ करने की क्षमता न हो - अक्षम
- जिसका खंडन न किया जा सके - अखंडनीय
- जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा न हो - अगोचर
- दूर तक फैलने वाला अत्यधिक नाशक आग - अग्निकांड
- जिसका जन्म पहले हुआ हो - अग्रज
- जो किसी देन या पारिश्रमिक मद्धे पहले से ही सोचे - अग्रिम
- जो अंडे से जन्म लेता है - अंडज
- किसी कथा के अन्तर्गत आने वाली कोई दूसरी कथा - अंतर्कथा
- राजभवन के अंदर महिलाओं का निवास - अंतःपुर
- मन में आप से उत्पन्न होने वाली प्रेरणा - अंतःप्रेरणा
- अंक में सोने वाला - अंकशायी
- अंक में स्थान पाया हुआ - अंकस्थ

'आ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- अग्नि से संबंधित या आग का - आग्नेय
- पूरे जीवन में - आजीवन
- जिस पर किसी का आतंक छाया हो – आतंकित
- जो बहुत क्रूर स्वभाव वाला हो - आततायी
- जो मृत्यु के समीप हो - आसन्नमृत्यु/मरणासन्न
- बालक से लेकर वृद्ध तक - आबालवृद्ध
- जिसकी भुजाएँ घुटनों तक लम्बी हो - आजानुबाहु
- जो जन्म लेते ही मर जाए - आद्यण्डपात
- जिसे विश्वास या दिलासा दिलाया गाया हो - आश्वस्त
- आशा से बहुत अधिक - आशातीत
- वह कवि जो तत्काल कविता कर डालता हैं - आशुकवि
- जो अपनी हत्या कर लेता हैं - आत्मघाती
- अपने आप को किसी के हाथ सौंपना या समर्पित करना - आत्मसमर्पण
- दूसरों के (सुख के) लिए अपने सुखों का त्याग – आत्मोत्सर्ग

'इ' व 'ई' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- किन्हीं घटनाओं का कालक्रम से किया गया वृत - इतिवृत्त
- किसी देश या समाज के सार्वजनिक क्षेत्र की घटनाओं, तथ्यों आदि का क्रमबद्ध विवरण- इतिहास
- इतिहास का जानकार - इतिहासज्ञ
- जो दूसरों की उन्नति देखकर जलता हो - ईर्ष्यालु
- उत्तर-पूर्व के बीच की दिशा - ईशान
- इस लोक से संबंधित - इहलौकिक/ऐहिक
- प्रायः वर्षा ऋतु में आकाश में दिखायी देने वाले सात रंगों वाले धनुष - इंद्रधनुष
- इंद्रियों को वश में रखने वाला - इंद्रियजित
- इमारत के लिए या इमारत से संबंधित - इमारती
- अपनी इच्छा के अनुसार सब काम करने वाला - इच्छाचारी
- किसी चीज या बात की इच्छा रखने वाला - इच्छुक

'उ' व 'ऊ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जिसका मन उदार हो - उदारमना
- जिसका हृदय उदार हो - उदारहृदय
- ऊपर आने वाला श्वास - उच्छ्वास
- ऊपर की ओर उछाला या फेंका हुआ - उत्क्षिप्त
- जिसका उल्लेख करना आवश्यक हो - उल्लेखनीय
- जिससे उपमी दी जाए - उपमान
- वह वस्तु जिसका उत्पादन हुआ हो - उत्पाद
- सूर्य जिस पर्वत के पीछे निकलता है - उदयाचल
- बीज से जन्म लेने वाला - उद्भिज
- उत्तर दिशा - उदीची
- वह हँसी जिसमें अपमान का भाव हो - उपहास
- जिस पर उपकार किया गया हो - उपकृत
- पर्वत के नीचे की समतल भूमि - उपत्यका

'ए' व 'ऐ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- इंद्रियों से संबंधित - ऐंद्रिक
- किसी एक पक्ष से संबंध रखने वाला - एकपक्षीय
- चांद्रमास के किसी पक्ष की ग्यारहवीं तिथि - एकादशी
- किसी वस्तु के क्रय-विक्रय का अकेला अधिकार - एकाधिकार
- इन्द्रजाल करने वाला - ऐन्द्रजालिक
- जिसका संबंध किसी एक देश से हो - एकदेशीय
- जो अपनी इच्छा पर निर्भर हो - ऐच्छिक
- इन्द्र का हाथी - ऐरावत
- जिसका चित्त एकाग्रित हो - एकाग्रचित
- इतिहास से संबंधित - ऐतिहासिक
- इस लोक से संबंध रखने वाला - ऐहलौकिक
- जो दिन में एक बार भोजन करता हो - एकाहारी

'ओ' व 'औ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जो उपनिषदों से संबंधित हो - औपनिषदिक
- साँप बिच्छू के जहर या भूतप्रेत के भय को मंत्रो से झाड़ने वाला - ओझा
- जिसका उच्चारण ओष्ठ से हो – ओष्ठ्य
- परब्रह्म का सूचक ओं शब्द - ओंकार
- आड़ या परदे के लिए रथ या पालकी को ढकने वाला कपड़ा - ओहार
- जिसका संबंध उपनिवेश या उपनिवेशों से है - औपनिवेशिक
- उपचार या ऊपरी दिखावे के रूप में होने वाला - औपचारिक

'क' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- उपकार को मानने वाला - कृतज्ञ
- उपकार को न मानने वाला - कृतघ्न
- हाथी का बच्चा - कलभ
- इस्लाम पर विश्वास न करने वाला - काफिर
- वृक्ष, लता, फूलों से घिरा हुआ कोई सुन्दर स्थान - कुंज
- जिस नारी की बोली कठोर हो - कर्कशा
- जो पुरुषत्वहीन हो - क्लीव
- जो पुरुष कविता लिखता हो - कवि
- जो स्त्री कविता लिखती हो - कवयित्री
- जो बर्तन बेचने का काम करे - कसेरा
- जो कहा गया है - कथित
- जिसने काई कसूर किया हो – कसूरवार
- जिसका हाथ बहुत तेज चलता हो - क्षिप्रहस्त
- जो क्षमा पाने के योग्य हो - क्षम्य
- जहाँ धरती और आकाश मिले हुए दिखाई दें - क्षितिज
- भूख से पीड़ित - क्षुधार्त
- किसी ग्रन्थ में अन्य व्यक्ति द्वारा जोड़ा गया भाग - क्षेपक
- पूर्व में हुई हानि की भरपाई - क्षतिपूर्ति
- क्षण भर में नष्ट होने वाला - क्षणभंगुर

'ख' से शुरू होने वाले एकल शब्द

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

VDO Pre. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)

FREE SAMPLE

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/4s8xtg

Online order - https://cutt.ly/BNLHzXa